Vol 6 Issue 1 July 2016 ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Manichander Thammishetty
Ph.d Research Scholar, Faculty of Education IASE, Osmania University, Hyderabad

International Advisory Board

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.org

ISSN: 2231-5063 Impact Factor : 4.6052(UIF) Volume - 6 | Issue - 1 | July - 2016

Golden Research Thoughts
International Recognition Multidisciplinary Research Journal
RNI : MAHMUL/2011/38887
ISSN No: 2231-5063
Impact Factor 2.2052 (UIF) [Yr. 2014]
3.4052 (UIF) [Yr. 2015]
4.6052 (UIF) [Yr. 2016]

GRT Golden Research Thoughts

लीलाधर जगूड़ी की नई कविता और वैश्वीकरण

रवीन्द्र कुमार[1] , डॉ. विनोद कुमार[2]
अनुसन्धित्सु– कला एवं भाषा विभाग, लवली प्रोफैशनल यूनिवर्सिटी, फगवाड़ा, पंजाब.

सारांश–
काव्य मानवीय भावाभिव्यक्ति के साधन का एक ऐसा सशक्त रूप है जिसने मानव जीवन को एक कला प्रदान की है। साहित्येतिहासिक दृष्टिपात से ज्ञातव्य है कि काव्य ही व्यक्ति के आनन्दानुभूति का माध्यम रहा है। हिन्दी साहित्य के पुरातन काल में रचित धार्मिक अथवासाहित्यक ग्रन्थ पद्यात्मक शैली में ही लिखत मिले। काव्य में भावनाओं के साथ–साथ कल्पना, यथार्थ, कला एवं प्रज्ञा का सम्पूर्ण सामंजस्य होता है जिसमें भाषा तथा उसके

विविध रूप अहम रोल निभाते हैं। आदिकवियों,विद्वानों एवं सन्तों ने काव्य की विलक्षणता बताते हुए इसके विभिन्न रूप प्रस्तुत किये। किन्तु बदलती सामाजिक परिस्थितियों ने काव्य के रूप, कला, अंग, विषय इत्यादि में भारी बदलाव ला खड़ा किया। अस्सी के दशक में आई वैश्वीकरण की लहर ने समस्त संसार के प्रत्येक भाग को अपनी जकड़ में ले लिया। हिन्दी साहित्य भी उनमें से एक था। जिसका असर समकालीन कवियों की रचनायों में भरसक मिलता है।

मुख्य शब्दः– मानवीयाभिव्यक्ति, आनन्दानुभूति, वैश्वीकरण,बाज़ारीकरण, उदारीकरण, रूढ़िवादी, पदार्थवाद, यंत्रीकरण, उदासीनता ।

प्रस्तावना–

आदिकाल से आधुनिकता के सफर में मानवीय जीवन में विभिन्न बदलाव आये हैं। उसी के प्रयार्स्त समय समय पर समाज ने भी करवट ली है।इन बदलती परिस्थितियों ने मानवीय विचारधारा में भी अपना असर विद्यमान रखा। जिससे सम्पूर्ण मानवजाति, समाज व साहित्य में भी बदलाव वांछनीय है। समस्त संसार में पुरातन सभ्यताओं से लेकर आधुनिक समाज तक मानवीय मन में उत्पन्न जिज्ञासू प्रवृतियों की सन्तुष्टता हेतु विभिन्न क्रान्तियाँ अस्तित्व में आईं। जिससे सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियाँ प्रभावित हुई।

यद्यपि बाज़ारीकरण एवं उदारीकरण तो पिछले कई दशकों से भारत में अपने पैर फैलाए हुए थे तदापि पिछले दो–तीन दश्कों से वैश्वीकरण एक ऐसी आंधी के रूप में, भारतीय समाज के समक्ष उपस्थित हुआ जिसने अपने चक्रव्यूह में परम्परागत रूढ़ियों को पूरी तरह से जकड़ लिया एवं अपनी नई नीतियाँ फैला दी। समस्त भारत का कोई भी ऐसा कोना नही रहा जिसने अपने पुरातन अस्तित्व को बरकरार रखा हो। खेतीबाड़ी, उद्योग, फिल्मी जगत, शिक्षा, संचार माध्यम, त्योहार, लोक कल्याण कार्य इत्यादि सभी पक्षों ने अपने इस बहते हुए पानी मे अपनी रूढ़िवादी प्रवृतियों का त्याग कर नया जामा पहना। ठीक उसी प्रकार इसका असर हिन्दी साहित्य में भी देखने को मिला। हिन्दी की गद्य और पद्य दोनों विधाओं में वैश्वीकरण का असर बाखूबी नजर आया। इस दौर में जितनी भी रचनायें लिखी गयी, पुरातन रचनाओं से काफी भिन्नता उनमें परिलक्षित होती है। इस दौर के लेखक एवं कवियों की विचारधारायों में भी बदलाव आना स्वाभाविक था। क्योंकि विचारधाराएँ तो सम–सामायिक परिस्थितियों का ही सारांश होता है तथा लेखक या कवि अपनी प्रज्ञा के माध्यम से कल्पना का सहारा लेकर

तत्कालीन संदर्भ का विश्लेषण कर उसका विवेचन करता है। अस्तु उन्होनें अपनी लेखनी हेतु जो भी विषय निर्धारित किए वह आधुनिक यथार्थता एवं पदार्थवाद के काफी नजदीक रहे।

कविता के क्षेत्र में वैश्वीकरण ने अपना भरपूर असर फैलाया। यूं भी कह सकते है कि वैश्वीकरण के असर से नयी कविता भी अछूती नही रही। नयी कविताओं के विषय, शीर्षक एवं सारांश से साफ पता चलता है कि वैश्वीकरण ने कवियों की विचारधारायों और उनकी मानसिकता पर अपनी गहरी छाप छोड़ी। ज्ञातव्य है कि काव्य में भावाभिव्यक्ति प्रधान होती है और वैश्वीकरण से प्रभावित सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक व राजनैतिक बदलाव कारण मानव जाति की भावनायों एवं उनकी अभिव्यक्तियों में भी बदलाव आया। जिस कारण कवितायों का स्वरूप ही बदल गया।

आधुनिक कवियों की बात करें तो आज इनकी तादात बहुत ज्यादा है जो सामाजिक परिपेक्ष को अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति के सहारे प्रस्तुत करने हेतु कविता का लड़ पकड़े हुए है। लीलाधर जगूड़ी आधुनिक कवि होने के साथ–साथ शिक्षक भी रहे हैं। विगत पचास सालों से अपने अनुभव व ज्ञान से कविता के क्षेत्र में साहित्य की सेवा में संलग्न हैं। वैश्वीकरण के दौर में उनकी कवितायों में भी भारी बदलाव आया। सबसे ज्यादा महँगाई के मुद्दे पर जनता विचलित हुई। महँगाई ने तो प्रेम जैसे प्राकृतिक अमुल्य उपहार को भी दरकिनार कर दिया। जिसका साक्षात् असर उनके काव्य मे प्रदर्शित हुआ।

"आज मैं आया। थका–माँदा
एक किलो आलू का भाव दस पैसा घटाने में
पूरी झिकझिक के बाद भी नाकामयाब
हर बार चार आना और महँगा आलू
दुनिया की आधी आज़ादी की तरह ख़रीदे"

"मैं तुम्हारे बारे में बहुत नही सोच सकता
मुझे दवाओं के पैसे चुकाने हैं दूध का हिसाब करना है"

वैश्वीकरण के दौर से उत्पन्न अव्यवस्थित परिस्थितियों से तो स्र्वप्रथम ऐसा महसूस होने लगा था कि पदार्थवादी सोच सहित भौतिकवाद की चमक ही मनुष्य पर हावी हो जाएगी और कदाचित् हुआ भी ऐसा ही। भौतिक वस्तुओं ने मनुष्य की सोच में ही संकुचिता ला खड़ी कर दी। क्योंकि इस दौर से केवल वस्तुओं का ही संचलन नही हुआ था वरन् मनुष्यों का भी तथा उनकी विचारधाराओं का भी संचलन हुआ जिस कारण सभ्यताओं का टकराव पैदा हुआ एवं सोच तथा विचारधारायें बदलने लगी। जिससे पदार्थवाद हावी होने लगा।सच्चिदानन्द कहते हैं कि "यह मनुष्य की मानवीयता और श्रेष्ठता की अभिव्यक्ति तथा उसके दैहिक व आध्यात्मिक कल्याण के लिए सहायक नही है। चीता तेज से तेज धावक से ज्यादा रफतार से दौड़ सकता है, हाथी में मनुष्य से कहीं ज्यादा बल होता है और गिद्ध आकाश में बहुत ऊँचा उड़ सकता है। लेकिन उनके यह गुण उन्हें मनुष्य से श्रेष्ठ नही बनाते। मनुष्य को प्रकृति की जो सबसे बड़ी देन मिली है वह है उसकी चिंतन–मनन की क्षमता जिससे वह दर्शन, विज्ञान और कलाओं के लोकेत्तर मूल्यों की तलाश में अपना जीवन व्यतीत कर सके।" किन्तु भूमण्डलीकरण की वजह से पदार्थवादी समाज का एक नया ही रूप मानव जाति के समक्ष उभरने लगा।

"हत्यारा पहने हुए है सबसे महँगे कपड़े
हत्यारा के सारे दाँत सोने के हैं पर आँतें पैदाइशी
हत्यारे के मुँह में जीभ चमड़े की मगर चम्मच चाँदी का है
हत्यारे का पाँव घायल मगर जूता लोहे का
हाथ हड्डी के मगर दस्ताने प्लेटिनम के हैं"

किसी भी देश की संस्कृति में उस देश की सभी जातियों के जीवन मूल्य के आधार निहित होते हैं। किन्तु मनुष्य की इस पदार्थवादी लिप्त संकुचित सोच ने सांस्कृतिक विचारधारा को तहस–नहस कर दिया था। क्योंकि मानव केवल उपभोक्ता ही रह गया था एवं उसके विचारों में भी वही लक्षण विद्यमान थे। इस प्रकार की विचारधारा किसी भी ध्वंस हुई सभ्यता की निशानी का प्रतीक बन गई थी। यद्यपि इस बात में कोई संदेह नही कि वैश्वीकरण से एक देश दुसरे देश के लगभग प्रत्येक विषय के आधार पर सम्पर्क में आया है। समस्त जगत एक ही प्रांगण बन गया। भारतीय बाज़ार को इससे अत्यधिक फायदा हुआ। किन्तु फिर भी भारतीय संस्कृति के हनन में इसका बहुत बड़ा योगदान है। घर, परिवार, रहने के तौर–तरीके, खान–पान, तीज–त्योहार, समारोह इत्यादि सब कुछ एक नये परिवर्तन के साथ हमारे ओर देख रहे थे।अपनी कविताओं के माध्यम से कभी–कभी लीलाधर जगुड़ी भारतीय संस्कारों की बचाने की गुहार लगाते हुए नज़र आते हैं।

"जो सबको सुन्दर बना देता हो
यहाँ तक कि विचार को भी
किसी ऐसे के बारे में बताओ"

साहित्य के क्षेत्र में वैश्वीकरण के असर ने भाषा को भी अछूता नही छोड़ा। राष्ट्रीय भाषा हिन्दी जो कभी भारतीय स्वतंत्रता का माध्यम बनी थी, आज संचार माध्यमों के कारण अपना अस्तित्व खोए जा रही है। आज हिन्दी विचार–विमर्श की अपेक्षा केवल संचार का एक माध्यम बन मूक बनी हुई है।"आज भूमंडलीकरण की भाषा का प्रसार हो रहा है तथा मातृबोलियाँ सिकुड़ और मर रही हैं।" जिस कारण

साहित्य भी प्रभावित हो रहा है। अठारहवी सदी में आये मुद्रण यंत्र की वजह से भाषा, लेखनी व साहित्य के प्रचार व प्रसार में अत्यधिक विस्तार हुआ, किन्तु बीसवीं सदी के अस्सी के दशक मे आकर विदेशी यंत्रिकी प्रणाली ने भाषा, लेखनी व साहित्य को अंदर से खोखला कर दिया। आज राष्ट्रीय भाषा के प्रति भारतीय लोगों में ही उदासीनता है। भाषा एवं लेखनी पर विचार–विमर्श की अपेक्षा वर्तमान मे लोगों का आकर्षण यंत्रों पर ही ज्यादा है।

"एक दिन घभराये हुये शब्द आये और कहने लगे
–हमें बचाइए
जगह जगह से हम काट दिए गए हैं
पंक्ति से हटा दिये गये हैं
या तो हमारे विकल्प ढूंढ लिये गये हैं
या हमारे बिना काम चलाया जाने लगा है"

ऐसे वातारण में कविता की भाषा भी केवल पदार्थवादी सोच का प्रगटावा ही बनी तथा मानव स्वार्थ की दलदल में धँसता चला गया। बाज़ार में बढ़ते पैसों, मशीनों, हथियारों, औज़ारों इत्यादि ने मानवीय मस्तिष्क से आध्यात्मवाद को खत्म कर भौतिकवाद का आवरण मढ़ दिया। मजबूरन कविताओं में उनका विवरण कवियों द्वारा यथावर्त ही किया जाने लगा।

"उन्हें भी मैं जानता हूँ
जो बूट पहनते हैं
पर एक बार भी मरे हुए जानवरों को
याद नहीं करते
जबकि बन्दूक को वे एक बार भी
नहीं भूल पाते"
"दुनिया माने पेट्रोल, मारुति कार, नयी दिल्ली
दुनिया माने सातवाँ निर्गुट शिखर सम्मेलन ?
दुनिया माने शरणार्थी
दुनिया माने तिब्बत और जनगण मन में सिंध
दुनिया माने लक्ष्मीधर मालवीय की जापान से आती हुई चिट्ठी
दुनिया माने पहाड़ समुद्र और रेगिस्तान
ध्वंस और बियाबान
वरना दुनिया माने क्या ?"

नयी कविताओं के शीर्षक में, उनकी शब्दावली में, उनकी विचारधारा में, उनके सारांश इत्यादि में वैश्वीकरण का प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है। बुरे वक्त की कविता, एक डरी हुई आत्मा, कार्य–व्यापार, यह भी एक युग है, बाज़ार में, ऑपरेशन टेबुल पर दुनिया की याद, अंतरराष्ट्रीय बाज़ार, ट्रैफिक जाम, इक्कीसवीं सदी का विज्ञापन, आर्थिक मामले इत्यादि कविताओं के शीर्षक बदलते जमाने की आबो–हवा को प्रतिबिंबित करते हैं। हाईजैकर, कालीपूंजी, न्यूर्याक, कंपनियाँ, पोलीथीन पाउच, बहुराष्ट्रीय, डालर, प्लेटिनम, रिजर्व बैंक, होर्डिंग, उपभोक्ता, करंट, स्विच, महँगाई इत्यादि शब्दों के इस्तेमाल से कवि यह स्पष्ट कर देना चाहता है कि जमाने के बदलाव ने कविता में से रस, शब्द शक्तियाँ एवं अलंकारों को स्वर्धा ही खत्म कर दिया है तथा इन कविताओं के सारांश में मानवीय बेबसी, प्रकृति प्रेम का अभाव, नैतिक मूल्यों का विघटन, डरी हुई आत्माएँ, बदलते जमाने की पदार्थवादी सोच इत्यादि यह प्रदर्शित करने पर मजबूर है कि वैश्वीकरण ने कविताओं के मूलभावों को भी दिल से निकाल कर दिमाग पर स्थापित कर दिया है तथा अप्रत्यक्ष रूप से यह सिद्ध करने की कोशिश की है कि पुरातन समय को अपना साथी बनाकर उसका राग अलापना कोई समझदारी भरा कार्य नही है। यह विकासात्मक प्रवृति के स्थान पर पिछड़ेपन की निशानियाँ हैं।

"यह कमेड़ी मिट्टी क्यों इकट्ठा कर रही हो
अब तो घर की पुताई के सारे रंग
भुवनलाला की दुकान में मिल जाते हैं
दादी ये भूग के पत्ते और वे छेनी–पत्थर क्यों सँभाल रही हो
अब अकेला नही चलता
सब जगह माचिस ही माचिस और लाइटर ही लाइटर आ गए हैं
दादा कैसे हैं मैं पूछता हूँ दादी से"

कदाचित् यह मान भी लिया जाए कि भूमण्डलीकरण की आगत से एक नए समाज का निर्माण हुआ। वस्तुएँ एव विचारधाराओं का आदान–प्रदान हुआ। भौतिकवाद अपनी चरमसीमा की ओर अग्रसर होने लगा। किन्तु यदि इसे साहित्यिक दृष्टि से प्रदर्शित किया जाए तो यह निश्चित है कि इस बदलाव से साहित्य अथवा काव्य के माध्यम से सामाजिक परिपेक्ष के दर्शन तो हमें होते हैं, किन्तु हिन्दी साहित्य एवं

Volume - 6 | Issue - 1 | July - 2016

हिन्दी भाषा की मौलिकता एवं अस्तित्व पर खतरे के बादल अवश्य मंडराने लगे हैं। क्योंकि यदि हिन्दी साहित्य के इतिहास पर दृष्टिपात किया जाए तो यह ज्ञातव्य है कि हिन्दी कविता की जो गरिमा उसके लिखने की शैली, उसकी शब्दावली एवं उसके छन्दबद्ध तरीके में थी वह कदाचित् वर्तमान समय में कहीं खो गई है और भूमण्डलीकरण के दौर ने तो उसे पूरा ही बदल कर रख दिया है। उसमें रसानुभूति का स्वर्धा ही अभाव है। ईशवरीय वंदना से सम्बन्धित मुद्दे तो लगभग समाप्त ही हो चुके हैं क्योंकि मानवीय सोच का आधार आध्यात्मवाद न रहकर बाज़ारीकरण पर स्थापित हो गया है अथवा कर दिया गया है।

सारांशर्त यह कहा जा सकता है कि कविता जोकि भावनाओं की धारा प्रवाह की अभिव्यक्ति की एक अत्यन्त सबल व मजबूत माध्यम के रूप में पुरातन दशकों से हिन्दी साहित्य की एक विधा के जरीए हिन्दी भाषा का एक मेरूदंड बनी हुई थी। समय के थपेड़ों ने उसमें से रस को चुरा लिया है, उसके सौन्दर्य को नष्ट कर दिया है, उसकी साहित्यिक भाषा का यंत्रीकरण कर दिया है, उसके शीर्षक व सारांश को पदार्थवादी सोच में लिप्त कर दिया है, आध्यात्मवादी आधार को उखाड़ फैंका है, उसे छन्द व लय से मुक्त कर दिया है। साहित्य को, भाषा को, कविता को बाज़ार की एक वस्तु बना कर रख दिया है। यदि यह प्रक्रिया ऐसे ही चलती रही तो भाषाऐं अपनी मौलिकता खो देंगी एवं कविता केवल ऐतिहासिक बिम्ब ही बन कर रह जाएगी।

1.लीलाधर जगूड़ी, भय भी शक्ति देता है, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2007, पृष्ठ–10
2.लीलाधर जगूड़ी, भय भी शक्ति देता है, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2007, पृष्ठ–11
3.सच्चिदानन्द सिन्हा, भूमंडलीकरण की चुनौतियाँ, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली 2003, पृष्ठ–25
4.लीलाधर जगूड़ी, भय भी शक्ति देता है, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2007, पृष्ठ–18
5.लीलाधर जगूड़ी, भय भी शक्ति देता है, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2007, पृष्ठ–142
6. http://www.abhivyakti-hindi.org/snibandh/2007/bhumandalikaran.htm
7.लीलाधर जगूड़ी, भय भी शक्ति देता है, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2007, पृष्ठ–75
8.लीलाधर जगूड़ी, घबराए हुए शब्द, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2009, पृष्ठ–39
9.लीलाधर जगूड़ी, अनुभव के आकाश में चाँद, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2003, पृष्ठ–71
10.लीलाधर जगूड़ी, भय भी शक्ति देता है, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2007, पृष्ठ–133

रवीन्द्र कुमार
अनुसन्धित्सु– कला एवं भाषा विभाग, लवली प्रोफैशनल यूनिवर्सिटी, फगवाड़ा, पंजाब.

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.org